International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2016; Page No. 19-21

नारी चेतना के अग्निपंख

प्रा. केंद्रे डी. बी.

हिंदी विभाग, कै. डॉ. शंकरराव सातव कला व वाणिज्य, महाविद्यालय, कळमनुरी जि. हिंगोली (म.रा.)

सारांश
नारी अपनी पुर्ण शक्ति के साथ अपनी गरीमा एवं अस्मिता को पुनः प्राप्त कर रही है। उसका उपेक्षा से भरा हुआ जीवन अब समाप्ति की कगार पर है। देश और दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में वह अब कसी भी स्तर पर पुरूष से कम नहीं है। स्त्री विमर्श का संघर्ष स्त्री पुरूष दोनों को एक सम समान धरातल पर लाकर खडा करता है। उसने पुरूषों को यह जताया है कि नारी का भी स्वतंत्र एवं पुरूष तुल्य अस्तित्व इस पृथ्वी पर है। स्त्री ने अब यह साबित किया है कि, वह देवी बनकर मंदिरों की चार दीवारी में या स्त्री बनकर घर गृहस्ति का चुल्हा–चौका, कपडे–बरतन धोते रहने में ही अपने आपको खपाना नहीं चाहती। उसने दुनिया को बताया है कि वह भी एक मानवी है। उसें भी अपनी जिंदगी जीने का पुर्ण अधिकार है। वह दया की पात्र बनना नहीं चाहती। वह शक्तिस्वरूपा बनकर जीना चाहती है।

मूल शब्द– प्रगतिः उन्नति या विकास, अग्निपंखः सर्वोदय (Wings of fire, Bigger Ventures)

प्रस्तावना
मिस्र एवं भारतीय दंतकथाओं के अनुसार, 'फिनिक्स' नामक पक्षी अपनी ही चिता की ज्वालाओं से पूनर्जन्म लेता है या फिर से जीवत होतो है। विश्व में नारी भी इस फिनिक्स पक्षी की तरह अचेतन तत्व से चेनामय बनकर अग्निपंखों की सहायता से आसमानी उडान भर रही है। उसने अपने इर्द–गिर्द पनपनेवाले कॅक्टस को छाटकर सुंदर फुलों का बगिचा विकसित कर लिया है। अपनी युगों–युगों की गुलामी की जंजिरों को तोडकर वह विकास के नये पैमाने निर्मान कर रही है। हमारा ऐसा कहना कदापी गलत न होगा कि, उसके इस चेतन रूप से मानव समाज की पूनर्रचना हो रही है। देश और दुनिया के हर एक क्षेत्र में वह अपनी काबिलीयत के दम पर अपना परछम लहरा रही है। पीछले कुछ वर्षों से भारतीय समाज में काफी कुछ बदलाव हुआ है। असल में देखा जाय तो इस प्रकार का सामाजिक परिवर्तन अखंडित चलने वाली प्रक्रिया है। परंतु साठोत्तरी युग में यह सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया लोगों के अंदर बाहर काफी कुछ बल पकड रही है। देश की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्थिती में नई उद्भावनाये सामने आने लगी है। इन उद्भावनाओं में से एक प्रमुख उद्भावना है– नारी चेतना या नारी सशक्तिकरण।

मनुवादी समाजव्यवस्था में नारी का स्थान शुद्रों से भी अतिशुद्र सा था। ऐसे प्राचीन अमानवीय सडी–गली मान्यताओं का टकराव नवीन सामाजिक सरंचना के निर्माण में होता है। सामाजिक चिंतकों ने स्त्री – पुरूष समानता की गुहार लगाई। मं. फुले, सावित्रीबाई फुले, राजर्षी शाहु महाराज, महर्षि कर्वे आदि के योगदान से नारी शिक्षित बनकर अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई। युगों युगों से बंदिनी बनकर पशुवत जीवन बितानेवाली नारी की यह मानवी बनने का संघर्ष आसान नहीं है। क्योंकि सामाजिक मान्यतायें एवं परंपराये बदलते–बदलते बदलती है। जो कोई इन्हे एकदम रातो रात बदलने की कोशिष करता है, समाज उसे हाशिये पर डाल देता है सदासर्वदा के लिए। नारी की यह संघर्ष यात्रा उसके खून से लिखी क्रांती है ऐसा कहने में मुझे कोई अतिशयोक्ति नहीं महसुस होती।

भारतीय धर्मसत्ता की बदलती नई व्याख्या के कारण ही स्त्रीयों को उसकी खोई हुई गरीमा एवं उंचाई फिर से वापस मिल रही है। भारतीय समाजव्यवस्था अब स्त्री–पुरूष समानता को स्वीकार कर रही है। ''स्त्री – पुरूष के सम्बन्धों में उपस्थित परिवर्तनों के कारण परम्परागत संस्कारो, मान्यताओं, धारणाओं में परिवर्तन होने लगा हो''[01] नारी ने अपने संघर्ष से अपनी काबिलियत का लोहा पुरूषों से मनवाया है इस में अब कोई शक नहीं है। नारी की चेतना एवं प्रगति को हम इस प्रकार से समझ सकते है।

मातृत्व की नई परिभाषा
सृष्टि ने मादा को मातृत्व का अनुपम उपहार दिया है। पृथ्वी पर सुक्ष्म से सुक्ष्म जीव से लेकर सृष्टि के रचयिता तक सब की जन्मदात्री कोई न कोई मॉ ही होती है। ''स्त्री तो मानव की जन्मदात्री है।''[02] मॉ अपने परिवार की सृष्टा एवं नियंता होती है। अपनी जान को जोखिम में डालकर बच्चे को जन्म देना, स्वयं को खपाकर उस नवजात का पालन पोषण करना, उसे जीवन मूल्यों एवं सदगुनों से सम्पन्न कराकर एक अच्छा नागरिक बनाना आदि सभी काम मॉ ही करती है। ओ भी निस्वार्थ होकर।

आदि–अनादी काल से मध्ययुग तक भले ही स्त्री को पुरूषों की अपेक्षा गौण तथा हीन स्थान प्राप्त हुआ है। परंतु आधुनिक युग में स्त्री किसी से अपनी तुलना करना नहीं चाहती। उसने अपनी क्षमता एवं काबिलियत को पहचान लिया है। प्रेरणा साखान नामक कवयित्री अपनी संघर्ष नामक कविता में लिखती है –

''मैं यदि धरा की धूल हूँ
तो क्या हुआ।
मुझे गगन के भाल का स्पर्ष करना है।
हजारों शूल के पथ में,
जरा विचलित न होना है,
अभी तो दिन नही निकला है,
मुझे तो रात भर जीवन से संघर्ष करना है।'' [03]

नारी वात्सल्य की साक्षात मूर्ति है। नारी के इसी गुनों के कारण ही पुरूषों का वंश बढता है, उसकी सभ्यता का विकास होता है। आधुनिक युग में नारी अपनी स्वतंत्रता को किसी भी किमत पर गिरवी रखना नहीं चाहती। स्वाधिनता के बाद स्त्री केवल स्व के अधिन रहनें में विश्वास करती है। वह अपनी शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता पर ही मॉ बनने का जोखिम उठा रही है। किसी और के दबाव को वह अब नहीं मानती। ''आज की नारी अपनी इच्छा से ही मॉ बनना चाहती है। वह पति या किसी के दबाव में आकर मॉ

बनना स्वीकार नहीं करती।''[04]
अपने परिवार के उज्वल भविष्य के लिए उसने छोटे परिवार की संकल्पना को स्वीकार किया है। 'हम दो हमारा एक' एसी मान्यतायें उसे मान्य हो रही है। अपने बच्चों को कौन से स्कुल में पढाना है, कौनसी शिक्षा देनी है इन सब बातों का निर्णय लेते समय उसकी राय भी ली जा रही है। घर परिवार के शादी ब्याह आदि जैसे महत्वपूर्ण निर्णय भी उसकी रजामंदी के बिना पूर्ण नहीं होते। इस प्रकार से अपने परिवार को कामयाबी के शिखर पर पहुंचाने के लिए वह सदैव तत्पर है। ऑफिसों में काम करते हुए भी वह अपने बच्चों की परवरिश में अपना पुर्ण योगदान दे रही है। एक परिवार मॉ से अनगिनत अपेक्षाएं रखता है। नारी अपने अनेक रूपों में (बेटी, मॉ, पत्नी, बहू, भाभी, सॉस) अपने अंगभूत गुणों दया, क्षमा, शांती, करूना, वात्सल्य, ममता, संयम आदि के साथ पारिवारिक जीवन में सुख एवं शांती का निर्माण कर रही है। कौसल्या बैसंत्री नामक लेखिका ने दोहरा अभिशाप नाकम अपनी रचने में एक ऐसी मॉ का पात्र वर्णनीत किया है जो पढी–लिखी होकर भी परिवारी जिम्मेदारियों को बखुबी निभा रही है। बच्चे ईश्वर की देन होती है इस प्राचीन मान्यता का वह खुलकर विरोध भी करती है।

साहसी एवं नीर्भया

समय के साथ स्त्री की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता का भी विकास हुआ है। ''अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी । ऑचल में हैं दुध और ऑखों में पानी।'' वाल नारी अब सबला एवं साहसी बन गयी है। अपने आपको देखने का उसका नजरीया पूर्णतः बदल गया है। वह अपने आपको भी परिवार एवं समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई मानती है। अब किसी स्वार्थी पुरूष के हाथों की कटपूतली बनकर रहना उसे पसंद नहीं है। दोहरा अभिशाप की नायिका को भली भांति ज्ञान हुआ है कि, दलित स्त्रियों को उसकी खूदकी लडाई उसे स्वयं लडनी होगी। वे अपने सही विरोधकों को पहचानकर उनसे दो – दो हाथ करने के लिए सदैव तैयार है। इससे यह बात पता चलती है कि अब नारी शिक्षित होकर सजग हो रही है। उनमें नवजागरण की चेतना निर्माण ही रही है। वह प्यार से अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार है परंतु जोर जबरदस्ती का वह खलकर कडा विरोध करती है। दौहरा अभिशाप की नायिका का अपने पति की मानसिक गुलामी को त्यागकर अपने बेटे के साथ रहना उसकी स्वतंत्र मानसिकता को सिध्द करता है। मालती जोषी लिखित 'निर्वासित कर दी तुमने मेरे प्रीत' नामक कहानी की 'सुमि' नामक पात्र अपने ही शादी में लडके वालों व्दारा अपने परिवारवालों का हो रहा अपमान चूपचाप सहन नहीं करती। बारात में आये लडकेवालों व्दारा उसके पिता को भला बुरा कहने से उसका खुन खौलने लगता है। अबला की तरह रहना उसे कतई पसंद नहीं है। वह छत से उतरकर मंडप में आती है। अपनी शादी स्वयं तुडवाकर ऐसे लोगों के घर की बहु बनने से इनकार करती है जहां स्त्रियों की इज्जत करने के संस्कार न हो ''यह सुनना था कि मुझे तो जैसे आग लग गई। मैं दालन सीढियां फलॉगती नीचे उतर आई। बीच मंडप में आकर मैंने ऐलान कर दिया, 'बाबूजी, इन लोगों को बिदाकर दीजिए। यह शादी नहीं हो सकती।''[05] इसी एकांकी की अन्य पात्रा 'पम्मी' तथा 'दिव्या' ने भी अपने निडरता एवं साहस का परिचय दिया है। दोनों ने सभी प्राचीन परंपराओं को छेद देते हुए अपने लिए अपनी इच्छा से सपनों का जीवन साथी चूना। ''पम्मी ने भी किसी को जहमत नहीं दी। किसी के अहसान नहीं लिए। उसने खुद अपना पति चुन लिया और मंदिर में फेरे ले लिए। घरवालों को बाद में सूचना भेज दी। उसे गर्व है कि उसके लिए न किसी ने जूते चटकाए, न किसी के पैर पूजे।''[06]
दिव्या भी बिल्कुल अपनी बुआ के जैसी ही है। वह लडकी होकर शादी करके अपने माता पिता को अकेला छोडना नहीं चाहती। वह लडकी बनकर ही अपने माता–पिता का सहारा बनना चाहती है। अपनी शादी वाले दिन वह अपनी बुआ 'सूमि' से कहती है– ''अगर मेरा वष चलता तो मम्मी – पापा को इस उम्र में अकेला छोडकर मैं कहीं नहीं जाती।''[07] वह दहेज का कडा विरोध भी करती है। अपने लिए ऐसा जीवन साथी चूनती है जो दहेज न ले।

साक्षर, सुषिक्षित एवं आत्मनिर्भर

आजादी के पश्चात 20 वी सदी के अन्तिम दशक में नारी शिक्षा का प्रतिशत बढ रहा है। स्त्री अधिक सजग होकर अपनी साक्षरता के प्रति सचेत हो रही है। हर साल वर्ततान पत्रों में इसके प्रमाण भी मिल रहे है। दसवी–बारहवी बोर्ड की परिक्षाओं में उतिर्ण होनेवाली एवं टॉप करनेवाली लडकियों का अनुपात लडकों की तुलना में अधिक है।
नारी इस संघर्षमय युग में सबसे अपनी शक्ति का लोहा मनवा रही है। उसने अपनी भावनाओं पर काबू पा लिया है। वह साक्षर बनकर सुशिक्षित भी हो रही है। वह भावनाओं की अपेक्षा उसका व्यवहारिक दृष्टिकोन उसे पूरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने की प्रेरणा दे रहा है। नारी विमर्श केवल पुरूषी सत्ता का विरोध नहीं बल्कि साक्षर, सुशिक्षित एवं आत्मनिर्भर बनती नारी का जीवन संघर्ष है। वह अपनी अस्मिता को बचाये रखने के लिए मुमकीक हर एक प्रयास कर रही है। ''मात्र भावनाओं के सहारे जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा आज की नारी व्यावहारिक दृष्टिकोण को लेकर है। वह पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने में विष्वास रखती है। परम्परागत संस्कारों में जकडे समाज में ठोस कदमों पर खडा रहने के लिए आज की नारी जैविक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक तथा राजनीतिक धरातल पर संघर्ष करती दिखाई देती है।''[08]
नारी आत्मनिर्भर बनकर खुद का अस्तित्व एवं पहचान अपने बलबुते पर बनाना चाहती है। वह पुरूष चाहे उसका पति ही क्यों न हो, उसके सहारे से वह आगे बढना या पहचाने जाना नहीं चाहती। वह अपनी प्रतिभा से अपना अस्तित्व दर्शाना चाहती है। वह एक स्वयं प्रकाशित सितारा बनना चाहती है। वह अपनी चुडियां, सिंदुर, साडी को अपनी कायरता या कमजोरी के प्रतिक बनने नहीं देना चाहती। वह उसे भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिक मानती है। राजनीति में अगर कोई सरकारी पक्ष को चुडियॉ, साडी देकर उसकी कमजोरी को उजागर करनेवाली पुरूषी मानसिकता का वह विरोध करती है। स्त्री लेखिका 'रमणिका गुप्ता' ने अपनी आत्मकथा 'हादसे' में एक प्रभावशाली नारी के रूप में अपना वास्तविक चित्रण किया है। वह स्वयं एक कॉग्रेस पार्टी की सक्रिय नेता के रूप में काम करती है। परंतु पार्टी में अपने लिए प्रतिकुल परिस्थिती देखकर वह अपने पद से इस्तिफा देकर संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हो जाती है। वह अपने त्यागपत्र में अपने स्वतंत्र एवं सक्षम होने का परिचय देते हुए लिखती है कि, ''मैं अपना रास्ता खुद बनाने में सक्षम हूॅ इसलिए अपना रास्ता खोज लूंगी, नहीं तो रास्ता ही मुझे खोज लेगा।''[09]
इसी संदर्भ में और अधिक प्रकाश डालते हुए डॉ. शेख शहेनाज अहेमद लिखते है ''आज नारी शक्ति को पहचान मिल रही है। समाज और परिवार में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व, व्यक्तित्व एवं पहचान को स्वीकार किया जा रहा है। वह घर और बाहर पुरूष के साथ जीवन के विविध क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही है। समाज का उसकी ओर देखने का दृष्टिकोन काफी परिवर्तित हो गया है। आधुनिक नारी अपनी इच्छानुसार जीवन यापन करने की कोषिष करती है। वह रूढि, परम्पराओं का विरोध कर राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रही है। यही है आज के नारी की शक्ति का परिचय।''[10]

लिंग भेदात्मक कमजोरी से मुक्ति

प्रकृति ने ही स्त्री को मातृत्व, करूणा, सहृदयी, कोमलता आदि गुनों से नवाजा है। पुरूष प्रधान समाज की नजर में स्त्री अबला, कमजोर है। वह उसे सदैव अपने अधिन रखना चाहता है। स्त्री को तन–मन–धन से अपना गुलाम बनाने की पुरूषी मानसिकता का नारी खुलकर विरोध कर रही है। स्त्री अपना मूल्य अपने तन–मन से लगानेवाली पुरूषी सोच को बदलना चाहती है। वह अपनी गुनवत्ता एवं काबिलियत को स्वयं सिध्द करना जानती है। पुरूष लिंग भेद की नींव डालकर अपना पुरूषी अहंकार बनाये रखना चाहता है।

आर्थिक रूप से स्वतंत्र एवं स्वावलंबी होकर नारी उसे गुलाम बनाकर रखनेवाली विवाह संस्था का भी विरोध कर रही है। सदियों से पुरूषी गुलामी में पल रही नारी को आज स्वछंद प्रेमीका बनकर रहना अधिक रास आ रहा है। नारी को मात्र भोग विलास की वस्तु समझनेवाली पुरूषी मानसिका को वह चुनौति दे रही है। परिवार एवं समाज में लडका–लडकी में लिंगभेदात्मक किये जानेवाला फर्क अब उसे कतई मान्य नहीं है। रामदरश मिश्र लिखित थकी हुई सुबह नामक कहानी की पात्रा लक्ष्मी हमें पूछती है –'' क्या स्त्रियों को कोई दूसरा ईष्वर पैदा करता है या यहां स्त्री – पुरूष के लिए दो नियम है।''[11]

नारी अब अपने भविष्य के प्रति भी अधिक सजग है। वह अपने भविष्य को खुद संवारना चाहती है। वह अब उस प्राचीन पुरूषप्रधान मानसिकता से बाहर निकल रही है जिसने नारी को एक गाय की तरह समझता था। चाहे जिस खुंटे से बांध दो वह उफ तक न करती थी। ''औरत कोई बोनसाई का पौधा नहीं है–जब जी चाहे उसकी जडे काटकर उसे वापस गमलों में रोप दिया। वह बौना बनाए रखने की इस साजिष को अस्वीकार भी कर सकती है।''[12]

नारी सभी बंधनों से मुक्त तो होना चाहती है परंतु स्वैराचारी बनना नहीं चाहती। उसे पुरूष की पत्नी बनकर रहने से अधिक पसंद है उसकी प्रेमिका (compenien) बन कर रहना। वह पुरूष से प्रतिस्पर्धा नहीं करना चाहती। बल्कि उसकी अनुगामिनी बनना चाहती है।

कामयाबी के षिखर पर नारी के विविध रूप

समाज में एक सामाजिक जीवन व्यतित करते समय नारी के विविध रूप देखने को मिलते है। वह बेटी, पत्नी, बहु भाभी, मौसी, खाला, दादी, नानी, चाची, मामी, सॉस, प्रेयसी आदि पारिवारीक रूपों के साथ कई सामाजिक रूपों में भी अपने आपको ढाल रही है। मदर तेरेसा, मेधा पाटकर, डॉ. साधना आमटे आदि जैसे उच्चतम समाज सेवीका के रूप में भी नारी अपना दमखम दिखा रही है। हेलरी किल्निटन, सोनिया गांधी, सुष्मा स्वराज, ममता बॉनजी, स्मृती इरानी, मायावती, जैसी कुशल राजनीतिज्ञ बनकर राष्ट्रसेवा भी कर रही है। मेरी कोम, सानिया नेहवाल, सानिया मिर्झा, मॉर्टिना हिंगीस, अंजुम चौप्रा, सरिना विलियम के रूप में खेलकुद के मैदान में नी नारी अपना हुनर साबित कर रही है।

साथ ही भारतीय प्रशासनीक एवं पोलिस सेवाऐं, तलाठी, सरपंच, न्युज एंकर, होटेल मॅनेजर, डॉक्टर, सेल्स गर्ल, रिशश्निष्ट, विविध कंपनीयों की मॅनेजिंग डायरेक्टर, ऑटोचालक, टेक्सी चालक से लेकर टेन, हवाईजहाज चलानेवाली नारी अपनी योग्यता के कारण ही सफलतम उंचाईयों के कदम चूम रही है। लता मंगेशकर उषा भोसले, साधना सरगम, श्रेया घोषाल, सुनिती चौहाण आदि के कंठ मधुर ध्वनि ने संपूर्ण विश्व की मानवीय सत्ता को मंत्रमुग्ध कर दिया है।

बॉलिवुड, हॉलिवुड, के साथ साथ अनेक चित्रपट सृष्टि में नारी शक्ति एवं सौंदर्य का ही बोलबाला है। यहां नारी अपने अभिनय एवं मनमोहक अदाकारी से वैश्विक बाजार में करोडों का व्यापार कर रही है। इसके साथ ही जिस समाज ने नारी को अपने घर की चौखट लांघने की पाबंदी लगाई थी उसी समाज में कल्पना चावला जैसी प्रतिभावान एवं साहसी महिला आकाश कन्या बनकर अपनी कल्पनाओं को पंख लगाकर अंतरिक्ष की सौर कर रही है। विश्व में अपना तथा अपने देश का नाम रौशन कर रही है। क्या यह सब नारी शक्ति का अग्निपंख नहीं है। नारी की यह कामयाबी की आसमानी उडान किसी फिनिक्स पक्षी से कम कहा है।

निष्कर्ष

आधुनिक काल में नारी ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व सिध्द कर लिया है। लिंग भेदात्मकता के चलते समाज के इस आधे हिस्से को पुरूषों ने अपने से हीन मानकर जहॉ हाशिये पर डाल दिया था, वहीं नारी अब मानव समाज के केंद्र में आकर चिंतन एवं चेतना का विषय बनी है। उसका निरक्षरता से साक्षर बनना, अबला से सबला बनने तक का सामाजिक जीवन प्रवास भले ही संघर्षमय रहा हो परंतु अब उसके अस्तित्व को पुरूष प्रधान भारतीय समाज में काफी हद तक निर्विवादित रूप से स्विकार किया है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्र में उसने अपनी खुदकी पहचान बना ली है। हिन्दी साहित्य अपनी सभी विधाओं में पूर्ण शक्ति के साथ नारी की इस संघर्षमयी आंदोलनात्मक यशोगाथा को वर्णनीत कर रहा है। आनेवाले भविष्य में यह गौरवमयी भारतीय संस्कृति का पूनर्उत्थान कहलाएगा अब इसमें कोइ दोराय नहीं है।

संदर्भ संकेत

01. डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई : महिला – आत्मकथा लेखन में नारी / ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी /प्रथम संस्करणः 2012 पृष्ठ : 86
02. डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई : महिला – आत्मकथा लेखन में नारी / ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी /प्रथम संस्करणः 2012 पृष्ठ : 86
03. प्ररेणा साखान : संघर्ष (कविता – बयान)पृष्ठ : 30
04. डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई : महिला – आत्मकथा लेखन में नारी / ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी /प्रथम संस्करणः 2012 पृष्ठ : 86
05. मालती जोशी : औरत एक रात है / परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली / संस्करण : 2004 पृष्ठ 16,17
06. मालती जोशी : औरत एक रात है / परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली / संस्करण : 2004 पृष्ठ : 17
07. मालती जोशी : औरत एक रात है / परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली / संस्करण : 2004 पृष्ठ : 23
08. सम्पा. डा. भालेराव विश्वनाथ, प्रा.सुर्यवंशी बालाजी, प्रा. सौ. प्रणिता पाटील : इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक का हिन्दी साहित्य / अक्षर वाङमय प्रकाशन, पुणे /प्रथम संस्करण : फरवरी 2015 पृष्ठ : 42
09. रमणीका गुप्ता : हादसे (आत्मकथा से)
10. सम्पा. डा. भालेराव विश्वनाथ, प्रा.सुर्यवंशी बालाजी, प्रा. सौ. प्रणिता पाटील : इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक का हिन्दी साहित्य / अक्षर वाङमय प्रकाशन, पुणे /प्रथम संस्करण : फरवरी 2015 पृष्ठ : 56
11. रामदरश मिश्र : थकी हुई कहानी
12. चित्रा मुदगल : एक जमीन अपनी अपनी (उपन्यास)